UP Board Class 7 History Notes Chapter 10 अकबर का युग (1556 ई०-1605 ई०)

पानीपत का दूसरा युद्ध (1556)

पानीपत का दूसरा युद्ध अकबर के वजीर व संरक्षक बैरम खां एवं मोहम्मद आदिल शाह सूर के वजीर हेमू के बीच हुआ। इसमें हेमू पराजित हुआ एवं मारा गया।
हेमू के पास अकबर से कहीं अधिक बड़ी सेना तथा 1,500 हाथी थे।
प्रारंभ में मुगल सेना के मुकाबले में हेमू को सफलता प्राप्त हुई, लेकिन दुर्भाग्य से एक तीर हेमू की आंख में घुस गया और उसने युद्ध का पासा पलट दिया। बाद में हेमू को गिरफ्तार कर उसकी हत्या कर दी गई ।
पानीपत की दूसरी लड़ाई के फलस्वरूप दिल्ली और आगरा अकबर के अधिकार में आ गये।
इस लड़ाई के बाद दिल्ली के तख्त के लिए मुगलों और अफगानों के बीच चलने वाला संघर्ष समाप्त हो गया और दिल्ली पर मुगलों का कब्जा हो गया और अगले तीन सौ वर्षों तक बरकरार रहा।

साम्राज्य विस्तार

अकबर अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। इसके लिए उसने सीधे संघर्ष करने, वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने, अधीनता स्वीकार करने वालों को शासन में पद देने तथा मित्रता करने की नीति अपनायी।
कई राजपूतों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली परंतु मेवाड़ के राणा प्रताप ने सर झुकाने से इनकार कर दिया। और जल्दी ही अकबर की सेना और राणा प्रताप का सामना सन 1576 में हल्दीघाटी के मैदान में हुआ था थोड़ी संख्या में होते हुए भी राणा ने मुगल सेना में उथल-पुथल मचा दी।

शासन व्यवस्था

अकबर ने साम्राज्य के प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए साम्राज्य को कई स्तरों में बांट रखा था। प्रशासन के कार्यों की देख – रेख के लिए केंद्र से लेकर गांव तक जिम्मेदार अधिकारियों को नियुक्ति की थी।

मनसबदारी व्यवस्था

अकबर बिना सुदृढ़ सेना के न तो साम्राज्य का विस्तार कर सकता था, और न ही उस पर अपना अधिकार बनाये रख सकता था। इसके लिए अकबर को अपने सैनिक अधिकारियों और सिपाहियों को सुगठित करना था। उसने इन दोनों लक्ष्यों की पूर्ति मनसबदारी व्यवस्था से की जिसमें सेना, सामन्तवर्ग और शासकीय अधिकारी व कर्मचारी शामिल थे। पूरे मुग़ल साम्राज्य में हजारों छोटे-बड़े मनसबदार यानी शासकीय अधिकारी व कर्मचारी थे।

साधारणतया मनसब का अर्थ पद अथवा प्रतिष्ठा है। अतः मनसबदार शाही सेवा में पदवी धारण करने वाले व्यक्ति होते थे। विभिन्न अंकों की संख्या अधिकारियों के पदों को निश्चित करने के लिए प्रयोग में लाई गई। सबसे छोटा मनसब 10 का तथा सबसे बड़ा 10,000 का होता था। बाद में 12,000 तक की संख्या तक के मनसब दिए गए।

मनसबदार साम्राज्य में बादशाह के कानून और आदेश लागू करते थे। बादशाह के खिलाफ अगर कोई विद्रोह करे तो मनसबदार विद्रोह दबाते थे। मुग़ल साम्राज्य की रक्षा करना और दूसरे क्षेत्रों में मुगल वंश का राज्य फैलाना भी मनसबदारों का काम था।

उन दिनों मुग़ल अमीरों यानी बड़े मनसबदारों को जितना वेतन मिलता था, उतना दुनिया के किसी भी अन्य राज्य के अधिकारियों को नहीं मिलता था। तभी तो मुग़ल अमीर बड़ी शान-शौकत से रहते थे। अकबर द्वारा निश्चित प्रशासनिक ढाँचा आने वाले मुगलों के प्रशासनिक ढाँचे का आधार बना। आज भी उत्तर प्रदेश में कई पदनाम व प्रशासनिक क्षेत्र इन नामों से जाने जाते हैं।

अकबर का वित्तीय प्रबन्धन

राज्य की आय के दो प्रधान साधन थे। भूमि का लगान तथा व्यापार पर कर । प्रत्येक गाँव का लगान निश्चित कर दिया गया था। किसानों से उपज का एक तिहाई भाग लगान के रूप में वसूल किया जाता था। किसी भी भूमि में एक निश्चित उपज न होने के कारण अकबर लगान का प्रबन्ध समय-समय पर कराने के पक्ष में था। उसने भूमि की नाप कराकर लगान का लेखा बनाने का कार्य राजा टोडरमल को सौंपा। लगान की इस व्यवस्था से किसानों को सुविधा हुई। उनको अब मालूम रहता था कि उपज का कितना भाग उनको लगान में देना है।

कृषि एवं भू-राजस्व प्रबन्धन

कृषि मुगल बादशाहों की समृद्धि का आधार थी। कृषि उपज की वृद्धि के लिए विशेष ध्यान दिया गया। इस समय एक ही खेत से विभिन्न फसलों का उत्पादन किया जाता था। खेत के माप के लिए बीघा का प्रयोग होता था। एक बीघा साठ (60) गज लम्बा व साठ (60) गज चौड़ा होता था।

सामाजिक सामन्जस्य के प्रयास

अकबर जानता था कि हिन्दुओं के सहयोग के बिना वह न तो साम्राज्य का विस्तार कर सकता था और न ही साम्राज्य पर अपना अधिकार बनाये रख सकता था। इसके लिए उसने अनेक हिन्दुओं को मनसबदार बनाया इनमें अधिकांश राजपूत राजा थे जिनसे अकबर ने वैवाहिक सम्बन्ध बनाये तथा व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित किए।

धार्मिक नीति

अकबर की धार्मिक सहिष्णुता का परिचय फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना के निर्माण से पता चलता है जिसमें वह सभी धर्मों के गुरुओं से उनके धर्म की अच्छी बातों को सुनता और उन पर चर्चा करता। उसने इस्लाम, हिन्दू, फारसी, जैन, ईसाई आदि धर्मों की अच्छी बातों को लेकर एक नए धार्मिक मार्ग दीन ए-इलाही की रूपरेखा बनाई।
अकबर ने सुलहल की नीति अपनायी जिससे इतने बड़े राज्य का काम शान्तिपूर्ण ढंग से चल सके तथा सब लोगों का समर्थन मिलता रहे। इस नीति को अकबर के बाद आने वाले मुगल बादशाहों ने भी अपनाया।

https://www.evidyarthi.in/